

कड्वा सच

राजा विक्रमादित्य ने फिर से पेड़ पर चढ़कर बेताल को नीचे उतार लिया और अपने कंधे पर डालकर चल दिए। बेताल हंसता रहा और राजा चुपचाप चलते रहे। राजा को दृढ़ प्रतिज्ञ चलता देखकर बेताल ने कहा, "ठीक है राजन, दूसरी कहानी सुनाता हूं..."

एक बार की बात है... वैशाली पर राजा चंद्रघर का शासन था। वह बहुत ही दयालु राजा थे। कहा जाता था कि कोई भी याचक उनके दरबार से खाली नहीं लौटता था।

एक दिन एक गरीब ब्राह्मण दरबार में आया। उसके साथ उसके दो अंधे बेटे थे। आदरपूर्वक राजा को नमन करके ब्राह्मण ने कहा, "महाराज, मैं बहुत गरीब हूं। अपने बच्चों को भीजन भी नहीं दे पाता हूं। यदि यही स्थिति रही तो ये अधिक दिन जीवित नहीं रह पाएंगे। मैं व्यापार शुरू करना चाहता हूं। मुझे दस सोने की अशर्फी देने की कृपा करें।"

राजा को ब्राह्मण तथा उसके पुत्रों पर बहुत दया आई। उन्होंने अपने कोषागार से दस अशर्फी ब्राह्मण को दिलवाकर पूछा, "तुम इन्हें वापस कब तक करोगे?" ब्राह्मण ने कहा, "महाराज, मैं एक साल के अंदर जरूर यह उधार चुकता कर दूंगा।"

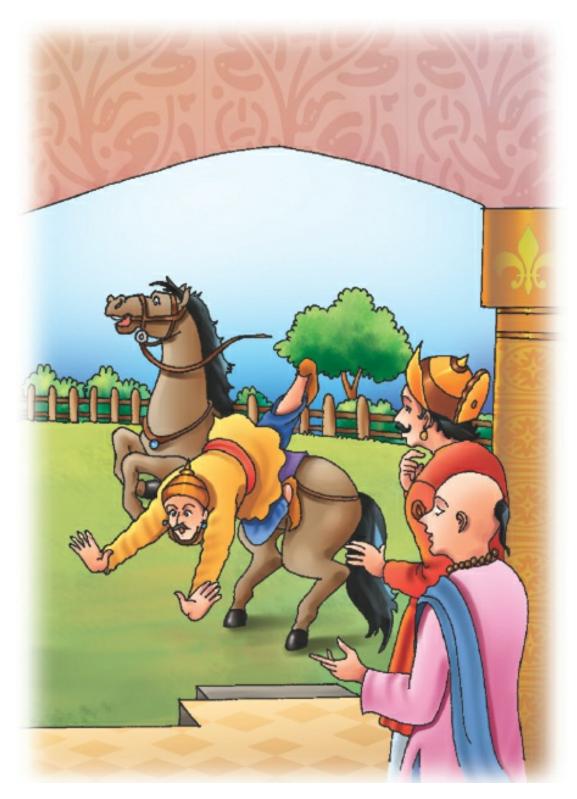
सशंकित राजा ने कहा, "और अगर पैसे लेकर तुम गायब हो गए तो?" ब्राह्मण ने कहा, "महाराज, आप चाहें तो मेरे बेटों को अपने पास पैसे लौटाने तक रख सकते हैं।"

राजा हैरान था। भला दो अंधे लड़के उसके किस काम के? राजा को हैरान देखकर ब्राह्मण ने कहा, "मेरे पुत्रों में विशेष गुण है। बड़ा पुत्र किसी भी घोड़े को छूकर और संघकर उस घोड़े की जाति और स्वभाव बता सकता है। छोटा पुत्र किसी पत्थर को हाथ में लेकर उसकी परख कर सकता है।" ब्राह्मण की बात सुनकर राजा ने प्रसन्नतापूर्वक दोनों को अपने महल में ब्राह्मण के उधार चुकता करने तक रख लिया।

एक दिन एक व्यापारी राजा के पास एक बहुत अच्छी नस्ल का घोड़ा लेकर आया। वह देखने में स्वस्थ और तगड़ा था। राजा को घोड़ा बहुत पसंद आया। सौदा पक्का होने वाला ही था कि राजा को अचानक ब्राह्मण पुत्र का ख्याल आया। उसे बुलवाया गया। उसने घोड़े को छूकर और सूंघकर बताया कि यह बहुत ही भड़कने वाला घोड़ा है। राजा ने इस पर सत्यता की जांच के लिए घुड़सवार को भेजा। घुड़सवार अनेक प्रयत्नों के बाद भी घोड़े पर बैठने में सफल नहीं हो पाया और घोड़े ने उसे गिरा दिया। ब्राह्मण पुत्र से प्रसन्न होकर राजा ने उसे पारितोषिक दिया।

कुछ दिनों के बाद राजा को रन्न खरीदने की इच्छा हुई। जौहरी ने उन्हें कीमती रन्न दिखाए। राजा ने एक बड़ा सा हीरा पसंद किया। उन्होंने उसे खरीदने से पहले ब्राह्मण के छोटे पुत्र को बुलवाया। ब्राह्मण पुत्र ने हीरा हाथ में लेकर कहा, "महाराज, यह श्रापित हीरा है। इसे पहनने वाले को अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

इस बात की सत्यता जानने की इच्छा से उन्होंने जौहरी की ओर नजर डाली। जौहरी ने इस बात की सत्यता को स्वीकार करते हुए कहा, "इनकी बात सही है। इससे पहले इसे तीन लोगों ने लिया था और उनकी मौत आश्चर्यजनक ढंग से अचानक ही हो गई।" यह सुनकर राजा ने हीरे की जगह एक बड़ा रूबी खरीदकर ब्राह्मण पुत्र को इनाम दिया।



साल पूरा होते-होते ब्राह्मण अशर्फियां लौटाने राजा के पास आया। उसका व्यापार अच्छा चल निकला था। राजा ने ब्राह्मण से पूछा कि पुत्रों की तरह क्या उसमें भी कोई विशेष गुण है? ब्राह्मण ने बताया कि वह किसी का हाथ देखकर उसका बीता हुआ कल बता सकता है। राजा ने ब्राह्मण से अपना हाथ देखने के लिए कहा।

राजा का हाथ देखकर ब्राह्मण ने कहा, "महाराज, इस बड़े राज्य के आप एक होनहार शासक हैं, पर आपके पिता जी एक चोर थे, जिन्होंने कई शहरों को लूटा था।"

ब्राह्मण की बात सुनते ही राजा आगबबूला हो गया।

"झूठे, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे बारे में मेरे ही दरबार में, ऐसी बात कहने की?" अपने सेवकों को राजा ने ब्राह्मण और उसके पुत्रों को पकड़कर उनका सिर कलम करने की आज्ञा दी।

इतना कहकर बेताल ने पूछा, "राजन! मुझे बताइये, आपके विचार में उन लोगों की मृत्यु का उत्तरदायी कौन है?"

विक्रमादित्य ने उत्तर दिया, "अपने और अपने पुत्र की मृत्यु का उत्तरदायी खुद ब्राह्मण था। हालांकि उसने सच कहा था पर कड़वे सच को कहने से पहले उसे बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए था। राजा को पता था कि वह एक चोर की संतान है पर सबके सामने इस बात का कहा जाना राजा के प्रभुत्व के लिए हानिकारक और अपमानजनक बात थी। इस बात के लिए ब्राह्मण को मौत की सजा तो होनी ही थी।"

बेताल की हंसी से जंगल गूंज उठा। "मैं आपके निर्णय से प्रभावित हुआ राजन!" यह कहकर बेताल वापस पेड़ पर चला गया।